श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सा विद्या या विमुक्तये

सम्यग्ज्ञान परिचय

Answer sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ______ 6 शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	थोभवंदन
(२)	ब्रह्मचर्यव्रत
(३)	पापप्रकृति
(४)	अजितनाथ
(५)	मियंत्रण
(६)	सिद्धायतन
(७)	अस्थिरषट्क
(८)	माया स्वरूप
(९)	कर्मादान
(१०)	अपवर्तनीय
(११)	सत्वादि गुण
(१२)	सचित परिहारी
(१३)	महाहिमवंत
(१४)	विनयपूर्वक
(१५)	आयंबिल
(१६)	कथाकथन
(१७)	वज्रऋषभनाराच
(१८)	अभक्ष्य
(१९)	गमनागमन
(२०)	उद्वर्तना

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	देवायुष्यकर्म
(२)	पुच्छोबाधि
(३)	श्रीमंडितस्वामी
(४)	सिद्दकूट
(५)	त्रसचतुष्क
(६)	शांतिनाथप्रभु
(७)	भाववंदन
(८)	सचितप्रतिबद्ध
(९)	अनित्यता
(१०)	प्रत्येक
(११)	नीचगोत्र
(१२)	नामासिक
(१३)	छद्मस्थ
(१४)	आयुष्यकर्म
(१५)	मौर्यपुत्र

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	एकसठ
(२)	९३ (त्यानवे)
(३)	अन्य
(४)	शिखर
(५)	आताप (उद्योत)
(६)	तत्काल उदित
(७)	गोत्र
(८)	त्रिक
(९)	पापरहित
(१०)	स्पर्श
(११)	चित्रकार के समान
(१२)	सुस्वर
(१३)	कांतिवाले
(१४)	कूटे
(१५)	भेद
(१६)	प्रकृतियाँ
(१७)	देवता के पति (इन्द्र)
(१८)	एक सो तिन
(१९)	फैलाकर
(२०)	अनादेय

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	५
(२)	१०	(७)	१
(३)	७	(८)	४
(४)	८	(९)	2
(५)	९	(१०)	3

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	१६ प्रहर
(२)	७९
(३)	८
(४)	७320
(५)	3½ हाथ
(६)	33
(७)	७
(८)	४
(९)	१०२
(१०)	१०३

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	१६
(२)	✓	(२)	20
(३)	×	(३)	९
(४)	×	(४)	2
(५)	✓	(५)	६
(६)	✓	(६)	१७
(७)	×	(७)	८
(८)	✓	(८)	१५
(९)	×	(९)	१८
(१०)	×	(१०)	५

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. श्री मंडित स्वामी की शंका का समाधान प्रभु ने कैसे किया → कर्म से मुक्त होने से कर्म से मुक्त होना नहीं और दूसरों को भी मुक्त नहीं करता कारण की मुक्तात्माओं को दूसरों को मुक्त करने के लिये फिर से अवतरित होने का ही नहीं होता है ये वेदपद कर्म से सदा के लिये मुक्त हो गये ऐसे मुक्तात्माओं का स्वरूप बताता है, परंतु छद्मस्थ अवस्था वाला जीव कर्म से बंधता है, संसार में परिभ्रमण भी करता है, सम्यग् ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना कर कर्म से मुक्त भी होते है और दूसरों को वे सम्यग् दर्शन, ज्ञान चारित्र में लीन कराकर कर्म से मुक्त भी कराते है।

२. भोग उपभोग पर नियंत्रण न होने पर क्या होता है → यदि भोग और उपभोग पर हमारा नियंत्रण नहीं तो हम पशु से भी बदतर जीवन जी रहे है। मांस मदिरा जैसे तामसिक पदार्थ लहसुन-प्याज जैसे तामसिक आहार लेने से मानसिक विकार एवं क्रूरता में वृद्धि होती है, ऐसे परिणाम वाले जीव धर्म करने की पात्रता व योग्यता खो बैठते है दया, क्षमा, ज्ञान, विवेक आदि का नाश होता है भोग उपभोग की सामग्री प्राप्त करने अधर्म के मार्ग पर जाने को तैयार हो जाता है अनेक पापस्थानकों से अपने जीवन को मलिन बनाता है अशुभ कर्मों का उपार्जन कर पाप के भार से भारी बनता है ऐसा जीव दुःख व दुर्गति के सिवाय कुछ भी पा नहीं सकता।

३. गुरुवंदन के लाभ बताइये → गुरुवंदन करने से प्राणी नीचगोत्र का क्षय करता है। उच्च गोत्र का बंध करता है, निकाचित कर्मग्रंथि का भेदन करते हुये शिथिल बंधन रूप कर देता है। श्री कृष्ण महाराजा ने श्री नेमिनाथ स्वामी को वंदन कर तीर्थंकर गोत्र बांधा, क्षायिक समकित की प्राप्ति की, सातवीं नारकी का बंधन शिथिल कर तिसरे नरक के आयुष्य में रूपांतरित कर लिया। गुरुवंदन के दो प्रकार है ① द्रव्य वंदन ② भाव वंदन द्रव्यवंदन से भाववंदन ज्यादा लाभदायक है।

४. सिद्धायतन का वर्णन कीजिये → इस सिद्धकूट पर सिद्धायतन (शाश्वत जिन चैत्य) है। प्रत्येक सिद्धायतन के मध्य में १०८ प्रतिमाजी ऋषभानन, चंद्रानन, वर्धमान तथा वारिषेण जिनकी २७-२७ विराजमान है। सिद्धायतन को पश्चिम दिशा में द्वार न होने से पूर्व-उत्तर दक्षिण तीन दिशाओं में तीन द्वार पर एक-एक ~~चोमुखी~~ चौमुखजी स्थित है। इसकी १२ प्रतिमाएं होती है अतः इस प्रत्येक सिद्धायतन में कुल (१०८+१२=१२०) एकसौ बीस प्रतिमाजी होती है। ६१ सिद्धायतन होने से उसकी कुल प्रतिमाजी ६१ × १२० = ७३२० होती है।

५. आयुष्य कर्म की विचित्रताये बताइये → इस कर्म का उदय चालु हो तब हमें इच्छा करे तो भी दूसरी गति में जा नहीं सकते इच्छा न हो ऐसी गति में इस कर्म के उदय से जाना ही पडता है। दूसरे सातों कर्म हर समय बांधते है यह कर्म हर समय न बंधकर भव में एकही बार भव के तीसरे, नवमे और सत्तावीसवे भाग में अथवा आखरी अंतर्मुहुर्त में ही बंधता है। प्रायः आयुष्य कर्म पर्वतिथि को बंधता है। इससे पर्व को आराधनामय बनाये, विराधना से अटके तो शुभ शुद्ध भाव में रमण करते सद्गति का आयुष्य बांधा जाय।